आयुर्वेद दिवस 2024

***

वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार

***

28 अक्टूबर,2024
नई दिल्ली

परिचय

आयुर्वेद चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। यह समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शरीर, मन और आत्मा में संतुलन प्राप्त करने पर केंद्रित है। आयुर्वेद शब्द दो संस्कृत शब्दों से लिया गया है: "आयु", जिसका अर्थ है जीवन, और "वेद", जिसका अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार, आयुर्वेद शब्द "जीवन के ज्ञान" को दर्शाता है। भारत सरकार आयुर्वेदिक सिद्धांतों, औषधीय जड़ी-बूटियों और जीवनशैली की प्रणालियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 2016 से हर साल धन्वंतरी जयंती (धनतेरस) पर आयुर्वेद दिवस मनाती आ रही है। भारत में, आयुर्वेद के ज्ञान का श्रेय दिव्य चिकित्सक धन्वंतरी जी को दिया जाता है, जिन्होंने भगवान ब्रह्मा से यह ज्ञान प्राप्त किया था। आयुर्वेद दिवस भगवान धन्वंतरी जी के योगदान का सम्मान करता है, जिसका उद्देश्य आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों, उपचार की पद्धतियों और जीवनशैली से जुड़े दृष्टिकोणों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

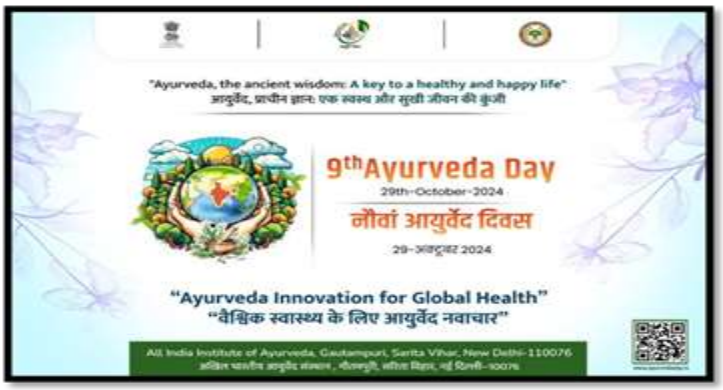

आयुष मंत्रालय 29 अक्टूबर, 2024 को 9वां आयुर्वेद दिवस मनाने की तैयारी कर रहा है। इस वर्ष का आयोजन अब तक का सबसे व्यापक होगा, जिसमें 150 से अधिक देश "वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार" थीम के तहत समारोह में शामिल होंगे।

9वां आयुर्वेद दिवस

धन्वंतरि जयंती और 9वें आयुर्वेद दिवस के अवसर पर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी 12,850 करोड़ रुपये से अधिक की कई परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे, जो सुलभ स्वास्थ्य सेवा के साथ-साथ आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता पर जोर देती हैं। इन प्रयासों का केंद्र चरण-II के उद्घाटन के साथ अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) का विस्तार है, जिसमें एक समर्पित पंचकर्म अस्पताल, एक आयुर्वेदिक फार्मेसी, एक खेल चिकित्सा इकाई, एक केंद्रीय पुस्तकालय, एक आईटी और स्टार्ट-अप इनक्यूबेशन केंद्र और 500 सीटों वाला एक सभागार शामिल है।

आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में प्रगति के पूरक के रूप में आयुर्वेद की क्षमता को पहचानते हुए, प्रधानमंत्री श्री मोदी चार आयुष उत्कृष्टता केंद्रों - भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु में मधुमेह और चयापचय विकारों के लिए उत्कृष्टता केंद्र; आईआईटी दिल्ली में रसौषधियों के लिए उन्नत तकनीकी समाधान, स्टार्ट-अप समर्थन और शुद्ध शून्य टिकाऊ समाधान के लिए टिकाऊ आयुष में उत्कृष्टता केंद्र; केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आयुर्वेद में मौलिक और समाधान संबंधी अनुसंधान के लिए उत्कृष्टता केंद्र; और जेएनयू, नई दिल्ली में आयुर्वेद और सिस्टम मेडिसिन पर उत्कृष्टता केंद्र का भी शुभारंभ करेंगे। ये चार आयुष उत्कृष्टता केंद्र स्वास्थ्य संबंधी आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने और स्थायी स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े समाधानों को बढ़ावा देने में आयुर्वेद की भूमिका को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित होंगे। प्रधानमंत्री ओडिशा के खोरधा और छत्तीसगढ़ के रायपुर में योग और प्राकृतिक चिकित्सा में दो केंद्रीय अनुसंधान संस्थानों की आधारशिला भी रखेंगे।

विषय की समझ

इस वर्ष का विषय, " वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार ", वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दों के समाधान के लिए आयुर्वेदिक नवाचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं:

गैर-संक्रामक रोगों (एनसीडी) और रोगाणुरोधी प्रतिरोध का मुकाबला करना।

जलवायु परिवर्तन, वृद्धावस्था एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा पोषण संबंधी विकारों से संबंधित चुनौतियों का समाधान करना।

निवारक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण पर जोर देना।

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी) दृष्टिकोण का समर्थन करना।

पिछले वर्षों के विषय

आयुर्वेद दिवस 2024 के फोकस क्षेत्र

महिला स्वास्थ्य : आयुर्वेद के समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करना, जिसमें आहार, जीवनशैली और निवारक स्वास्थ्य पद्धतियों को शामिल किया गया है।

कार्यस्थल कल्याण : कार्यस्थल पर शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक सिद्धांतों को बढ़ावा देना, तनाव प्रबंधन और उत्पादकता पर ध्यान केंद्रित करना।

स्कूल कल्याण कार्यक्रम : बच्चों में आयुर्वेदिक कल्याण को प्रोत्साहित करना, जिसमें प्रतिरक्षा-बढ़ाने और व्यक्तिगत पोषण संबंधी मार्गदर्शन शामिल है।

खाद्य नवप्रवर्तन : आयुर्वेदिक आहार सिद्धांतों और खाद्य नवप्रवर्तनों की खोज, पारंपरिक और आधुनिक पाक तकनीकों का सम्मिश्रण।

संचालित गतिविधियां

आयुर्वेद का जश्न मनाने और इसके लाभों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए 21 अक्टूबर से 29 अक्टूबर, 2024 तक कई कार्यक्रमों की योजना बनाई गई थी। गतिविधियों में वैश्विक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए अभियान, स्वास्थ्य और कल्याण के प्रबंधन पर शैक्षिक व्याख्यान, सार्वजनिक रैलियां और निःशुल्क निदान शिविर शामिल थे। इस पहल का उद्देश्य समुदाय को शामिल करना और आयुर्वेदिक पद्धतियों की प्रभावकारिता को दर्शाना था। अभियान का समापन स्वास्थ्य और कल्याण के लिए आशीर्वाद मांगने वाले एक विशेष समारोह के साथ हुआ।

Date	Days	Activity Name
21 October	Monday	I Support Ayurveda" & Selfie Campaign
22 October	Tuesday	Patient Awareness Lectures on Ayurveda
23 October	Wednesday	Lectures on Ayurveda for Workplace Wellness
24 October	Thursday	Lectures on Ayurveda for Women's Wellness
25 October	Friday	Lecture on Prakruti Parikshan Concept in Ayurveda
26 October	Saturday	Rally/Run for Ayurveda
27 October	Sunday	Ayurveda Diagnostic & Treatment
28 October	Monday	I Support Ayurveda" & Selfie Campaign (Second Round)
29 October	Tuesday	9th Ayurveda Day Celebration & Dhanvantari Pujan

इतिहास

आयुर्वेद, जीवन का विज्ञान स्वास्थ्य देखभाल की प्राचीन और व्यापक प्रणालियों में से एक है। अच्छे स्वास्थ्य और लंबे जीवन की खोज शायद मानव अस्तित्व जितनी ही पुरानी है। 5000 और 1000 ईसा पूर्व के बीच रचित चार वेदों को सबसे पुराना भारतीय साहित्य माना जाता है, जिसमें पौधों और प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा उपचार की जानकारी है। रामायण और महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्यों में भी चिकित्सा और शल्य चिकित्सा का संदर्भ मिलता है। हालांकि, आयुर्वेद को संहिता (संग्रह) की अवधि से यानी लगभग 1000 ईसा पूर्व से एक पूर्ण विकसित चिकित्सा प्रणाली के रूप में स्थापित किया गया था। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे संग्रह इस अवधि के दौरान आठ विशेषताओं के साथ व्यवस्थित तरीके से लिखे गए थे। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता के आवश्यक विवरणों को 6वीं - 7वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान वृद्ध वाग्भट और वाग्भट द्वारा लिखित अष्टांग संग्रह और अष्टांग हृदय नामक ग्रंथों में संकलित और अद्यतन किया गया था। इस प्रकार, बृहत्त्रयी नामक मुख्य तीन ग्रंथ, अर्थात् चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग संग्रह, बाद के विद्वानों के लिए ग्रंथ लिखने का आधार बने।

लगभग 200 ई.पू., दुनिया के विभिन्न भागों से चिकित्सा छात्र आयुर्वेद सीखने के लिए प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय में आते थे। 200 से 700 ई.पू. तक, नालंदा विश्वविद्यालय ने मुख्य रूप से जापान, चीन आदि से विदेशी चिकित्सा छात्रों को भी आकर्षित किया। मिस्र के लोगों ने 400 ई.पू. में सिकंदर के आक्रमण से बहुत पहले भारत के साथ अपने समुद्री व्यापार के माध्यम से आयुर्वेद के बारे में सीखा था। यूनानियों और रोमियों को उनके आक्रमण के बाद इसके बारे में पता चला। पहली सहस्राब्दी के शुरुआती भाग में आयुर्वेद बौद्ध धर्म के माध्यम से पूर्व में फैल गया और इसने तिब्बती और चीनी चिकित्सा पद्धति और जड़ी-बूटियों को बहुत प्रभावित किया।

800 ई. के आसपास नागार्जुन ने विभिन्न धातुओं के औषधीय अनुप्रयोगों पर व्यापक अध्ययन किया। आयुर्वेदिक साहित्य में नए उपयोगों के लिए कई विदेशी और देशी औषधियों का उल्लेख मिलता है। 16वीं शताब्दी के बाद आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के आधार पर नई बीमारियों के निदान और उपचार को शामिल किया गया है।

1827 में, भारत में पहला आयुर्वेद पाठ्यक्रम कलकत्ता के सरकारी संस्कृत कॉलेज में शुरू किया गया था। 20वीं सदी की शुरुआत में, प्रांतीय शासकों के संरक्षण में भारत में कई आयुर्वेद कॉलेज स्थापित किए गए थे। 1970 के दशक की शुरुआत में आयुर्वेद ने और अधिक जमीन हासिल की, क्योंकि आयुर्वेद के महत्व की धीरे-धीरे मान्यता फिर से शुरू हुई। 20वीं सदी के दौरान बहुत सारे शैक्षणिक कार्य किए गए और कई किताबें लिखी गईं और सेमिनार और संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

वर्तमान में भारत में आयुर्वेद में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की शिक्षा अच्छी तरह से विनियमित है। चिकित्सकों और निर्माताओं का एक सराहनीय नेटवर्क मौजूद है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास ने समुदाय तक पहुंच को सराहनीय तरीके से बेहतर बनाया है।

आयुर्वेद का बढ़ता वैश्विक प्रभाव

आयुर्वेद वैश्विक मंच पर उल्लेखनीय विस्तार का अनुभव कर रहा है, 24 देशों में इसे पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के रूप में कानूनी मान्यता प्राप्त है। यह औपचारिक मान्यता अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा में आयुर्वेद की बढ़ती भूमिका को उजागर करती है, और सहयोगी मंच, जैसे कि पारंपरिक चिकित्सा पर एससीओ विशेषज्ञ कार्य समूह, पारंपरिक चिकित्सा पर बिम्सटेक कार्यबल और पारंपरिक चिकित्सा पर ब्रिक्स उच्च-स्तरीय मंच, इसकी उपस्थिति को और मजबूत करते हैं। ये मंच ज्ञान के आदान-प्रदान और नीति संबंधी तालमेल को बढ़ावा देते हैं, जिससे दुनिया भर में स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों में आयुर्वेद के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त होता है। इसके अतिरिक्त, आयुर्वेद उत्पादों को अब 100 से अधिक देशों में निर्यात किया जाता है, जो आयुर्वेदिक पद्धतियों और उत्पादों में अंतरराष्ट्रीय मांग और विश्वास को दर्शाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा आईसीडी-11 टीएम मॉड्यूल 2 में आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी के लिए रुग्णता कोड का एकीकरण एक और मील का पत्थर है, जो आयुर्वेदिक स्वास्थ्य से जुड़े क्रियाकलापों के अधिक सटीक दस्तावेजीकरण और मान्यता को सक्षम बनाता है। आयुर्वेद अभ्यास और प्रशिक्षण के लिए बेंचमार्क भी स्थापित किए हैं, जो आयुर्वेदिक देखभाल की गुणवत्ता और प्रभावशीलता के लिए एक वैश्विक मानक स्थापित करते हैं। इन प्रयासों में सबसे आगे गुजरात के जामनगर में ग्लोबल ट्रेडिशनल मेडिसिन सेंटर (जीटीएमसी) है, जो आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में अनुसंधान, शिक्षा और पेशे को आगे बढ़ाने वाला एक समर्पित संस्थान है।

निष्कर्ष

आयुर्वेद दिवस 2024 आयुर्वेद के प्राचीन ज्ञान और आधुनिक प्रासंगिकता दोनों का जश्न मनाता है। इस वर्ष की थीम "वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार" के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं का समाधान करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। 150 से अधिक देशों की भागीदारी के साथ, यह कार्यक्रम गैर-संक्रामक रोगों, रोगाणुरोधी प्रतिरोध और जलवायु संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए आयुर्वेद की क्षमता पर जोर देता है, और स्वास्थ्य के लिए इसके

निवारक और टिकाऊ दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आईसीडी-11 और वैश्विक सहयोग के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त, आयुर्वेद की पद्धतियां दुनिया भर में स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों में लगातार एकीकृत हो रही हैं। इस वर्ष का आयुर्वेद दिवस न केवल भगवान धन्वंतरि की विरासत का सम्मान करता है, बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य और सतत विकास लक्ष्यों में सार्थक योगदान देने के लिए आयुर्वेदिक सिद्धांतों का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

संदर्भ-

https://ayurvedaday.in/

https://pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=151691&ModuleId=3®=3&lang=1
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2059594

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2068804

https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2067357 ।

***

एमजी/आरपीएम/केसी/एसकेएस/एचबी

(AYUSH Released ID: 153375)